न्याय-वैशेषिक दर्शन

सामान्य विशेषताएँ

न्याय दर्शन यथार्थवादी दर्शन है - क्योंकि वाह्य जगत का
⇒ यथार्थ सत्ता स्वीकार करता है।

⇒ वस्तुवादी दर्शन है क्योंकि ज्ञेय वस्तु का ज्ञाता से स्वतंत्र अस्तित्व है।

⇒ ज्ञान में वस्तुएँ प्रकाशित होती हैं इसलिए हम वस्तु का अस्तित्व स्वीकार करते हैं। (मानाधीना मेय सिद्धि)

⇒ ज्ञान वस्तु का निर्माण नहीं करता बल्कि ज्ञान वस्तु का प्रकाशक है। (ज्ञानाधीना वस्तुसत्ता)

⇒ आस्तिक दर्शन है क्योंकि यह वेदों की प्रामाणिकता स्वीकार करता है।

⇒ न्याय-वैशेषिक समान-तंत्र कहलाते हैं। न्याय की ज्ञानमीमांसा एवं तर्कशास्त्र प्रधान है जबकि वैशेषिक की तत्वमीमांसा (पदार्थ विचार) प्रधान है।

⇒ यह ईश्वरवादी दर्शन है क्योंकि यह जगत के कर्ता, व्यवस्थाता, कर्म-फल नियंता, शब्द-अर्थ संबंध की स्थापना करनेवाले के रूप में ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार करता है।

⇒ कार्य-कारण सिद्धांत की दृष्टि से न्याय-वैशेषिक आरम्भवादी दर्शन है क्योंकि यह कारण से भिन्न कार्य को नवीन आरम्भ मानता है।

सार-संकलन

न्याय
प्रवर्तक - गौतम
मूलग्रंथ - न्याय सूत्र)
(कुल पदार्थ - 16, प्रमाण - 04)
प्रमुख ग्रंथ -
- न्याय भाष्य - वात्स्यायन
- न्यायमंजरी - जयंत
- तर्क भाषा - केशवमिश्र
- तर्क संग्रह - अन्नंभट्ट
- भाषा परिच्छेद - विश्वनाथ

वैशेषिक दर्शन
प्रवर्तक - कणाद or (अक्षपाद)
मूल ग्रंथ - वैशेषिक सूत्र
कुल पदार्थ - 07 (अभाव, बाद में जोड़ा गया)
कुल प्रमाण - 02
(बाद में न्याय-वैशेषिक दर्शन में सम्मिलित रूप में चार-प्रमाण एवं सात पदार्थों की सत्ता स्वीकार की गई)

प्रामाण्य - परतः प्रामाण्यवाद
ख्याति - अन्यथा ख्याति
मुक्ति - चैतन्य रहित
आनंद रहित
शुद्ध सत्ता आत्मा के स्वरूप में अवस्थित होना)

कार्य कारण संबंध
- यदृच्छावाद (चार्वाक)
- असत्कार्यवाद (कार्य अपने कारण में निहित नहीं है)
  - क्षणभंगवाद प्रतीत्यसमुत्पाद ⇒ बौद्ध
  - आरम्भवाद ⇒ न्याय-वैशेषिक
- सत्कार्यवाद (कार्य कारण में पहले से निहित है।)
  - परिणामवाद
    - प्रकृति परिणाम (सांख्य)
    - ईश्वरपरिणाम (रामानुज)
  - विवर्तवाद ⇒ शंकर वेदान्त

Scanned with CamScanner